

Asbestic Ore Deposits

3725. Shri M. B. Thakore: Will the Minister of Steel, Mines and Fuel be pleased to state:

(a) whether it is a fact that deposits of Asbestic ore have been found from the Arwalli mountains in Sabarkantha District of Gujarat; and

(b) if so, the details thereof?

The Minister of Mines and Oil (Shri K. D. Malaviya): (a) and (b). No new deposits have been found. However, deposits are known to occur at Devi Mori area, Raigad, Bhanmer, Thuruvas, Ghanta and Mora. Asbestos is of amphibole variety and chances of finding Chrysotile variety are not bright.

12.12 hrs.

MOTIONS FOR ADJOURNMENT

FIRST AT DAIRY KISHAN CHAND OF BELA ROAD

Mr. Speaker: I have received notices of adjournment motions and also calling attention notice relating to the serious fire in Delhi near Rajghat.

The Minister of Home Affairs (Shri Lal Bahadur Shastri): Sir, if you will permit me, I shall read out a brief statement.

Mr. Speaker: Is it a long one?

Shri Lal Bahadur Shastri: It is about two pages.

Mr. Speaker: That does not matter.

Shri Lal Bahadur Shastri: We feel so sad and sorry that a serious fire broke out on the afternoon of the 20th April at Dairy Kishan Chand by the side of Bela Road resulting in deaths and serious losses to the people living in that area. The first information was received at the Fire Service Headquarters at about 1 p.m., that is, at 13.08 hours. Three units of the Fire Brigade reached the site just after about six minutes. They were followed by more units and these units immediately went into action. Four

more pumping units and four special units reached the spot and by about 1.30 p.m., that is, by about 13.30 hours nine pumping units and four extra units were in full operation. 85 members of the Fire Service including officers fought the fire and it was declared as under control at about 14.46 hours. By the time the fire units arrived the whole place was ablaze as there was a strong wind and the colony consisted of thatched huts.

The rescue work was done by the Fire Service and the Police who in adequate strength was deployed immediately to assist in rescue work. Nine persons seriously injured were rushed to the Irwin Hospital. The Corporation detailed a medical van with a doctor to render aid on the spot.

The total deaths are eleven. Of these nine died on the spot and two in the hospital. The condition of some others is serious. It is difficult to be quite accurate about the exact number, but it is roughly estimated that the number of huts affected is in the neighbourhood of between 800 to 1,000.

A combined operational control room was established on the spot to co-ordinate action by the Corporation, the District authorities, the Police and volunteers of non-official organisations. The representatives of all these organisations were manning the control room round the clock. The Corporation arranged 100 shamianas and 100 durries. Water tanks were sent by the Corporation to enable the people to store water for drinking purposes. Distribution of 100 lbs. of powdered milk was arranged for 1,500 children through the Indian Red Cross Society, Delhi Branch. Cooked food was collected from different and numerous sources and distributed.

The District Administration received full co-operation from non-official bodies and specially from people living in Daryaganj area. Volunteer bodies like the Bharat Sewak Samaj, Gandhi Smarak Nidhi, Multani Sewa Samaj, welfare bodies

[Shri Lal Bahadur Shastri]

of Daryaganj and individuals are rendering very useful service. Each family affected is also being given some cash relief.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (गुडगांव) : राजघाट के समीप यह जो भीषण आग-कांड हुआ है, क्या इस से पहले उन लोगों ने इस प्रकार के आवेदन-पत्र दिये थे कि हम को यहां से हटा कर किसी और उचित स्थान पर बसाया जाय ? मैं यह भी कहना चाहता हूं कि राजघाट में गांधी जी की समाधि के निकट, यह जो स्लम एरिया है, वह राजधानी पर कलंक है। अब जो इतना बड़ा भीषण अग्नि-कांड हुआ है, तो सरकार इस सम्बन्ध में भविष्य में क्या कार्यवाही करने जा रही है उन लोगों को कहां बसाया जायेगा ?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : मैं आज सबेरे वहां गया था। माननीय सदस्य कहते हैं कि उन लोगों को जहां भी कहा जाय, वहां वे जाने के लिये तैयार हैं। यह ठीक नहीं है। मैं ने खुद इस बारे में बात की। वे लोग उस जगह पर, या बिल्कुल उस के आस-पास ही रहना चाहते हैं। वे वहां से हटना नहीं चाहते हैं। कारपोरेशन की स्वाहिश थी कि उन के लिये दूसरी जगह दें, लेकिन वह कुछ दूरी पर है। उस जगह पर कोई बस्ती बनाने का हमारा प्लान नहीं है। उस में उस की जगह नहीं रखी गई है। लेकिन फिर भी मैं इतना यह सकता हूं कि अब जो मैं ने चीफ कमिशनर और दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन के और अफसरों से यह कहा है कि वे इस पर फौरन ही विचार करें और कारपोरेशन से परामर्श कर तय करें कि उन को कहां बसाया जाये ताकि जहां वे रहें, वहां वे पक्की जगह और पक्के मकान बना सकें।

प्रधान मंत्री तथा वंडेसिक-कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : मैं इस सिलसिले में कुछ भ्रम कर दूँ कि मैं दो बरस से इस

कोशिश में हूँ कि वे वहां से हटें, लेकिन जो लोग वहां रहते थे, व मंजूर नहीं करते थे और इस में जबर्दस्ती करना अच्छा नहीं लगता था। जहां तक हो सके, जबर्दस्ती नहीं करना चाहते थे, लेकिन कोशिश बराबर जारी रही और मेरे पास रिपोर्ट आती थी कि वे लोग वहां से नहीं हटना चाहते हैं। लेकिन इस में शक नहीं है कि उन का वहां रहना नामुनासिब है, उन के लिये भी और राजघाट समाधि के लिये भी और जरूर कहीं और उन का इन्तजाम करना चाहिये।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या गवर्नमेंट की तरफ से उन को वहां से हटा कर किसी दूसरी जगह बसाने के सम्बन्ध में कोई प्रोपोजल पेश की गई थी ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : यह तो मैं तफसील से नहीं कह सकता, लेकिन ऐसे प्रोपोजल थे और उन की शिकायत आम तौर पर यह होती है कि वह जगह हमारे काम से एक मील या दो मील दूर है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : उन को किसी जगह के लिये कोई पटिकुलर प्रोपोजल दिया गया या नहीं ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैं तफसील से नहीं कह सकता, लेकिन मेरा ह्याल है कि ऐसी तजवीजें थीं और उन को कही गई होंगी।

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर) : माननीय प्रधान मंत्री जी ने अभी फरमाया कि उन को पहले भी इतिला दी गई थी कि वे वहां से चले जायें, लेकिन क्या उन्हें यह मालूम है कि जहां वे रहते थे, वहां पाह का भी इन्तजाम नहीं था और यही वजह है कि शौचों को बसाया नहीं जा सका ? दूसर सवाल यह है कि क्या यह बस्ती जलने के बाद सिर्फ इसी का इन्तजाम किया जायेगा, या दिल्ली में शहवाला और जो

दूसरी बस्तियां हैं, जहां तकरीबन चालीस, पचास हजार छोटे छोटे काम करने वाले रहते हैं, उन का भी इन्तजाम होगा, ताकि ऐसी हालत न हो ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : जहां तक पानी की बात है, ऐसा तो नहीं है कि वहां पानी नहीं था, लेकिन वहां हाइड्रेंट कोई नहीं था, जहां से पानी एक साथ ज्यादा ले सकें ।

श्री खुशबकत राय (खेरी) : उसी वजह से आग बढ़ गई ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : यह जो क्षेत्र है, जहां लोगों ने जबर्दस्ती, अपने आप, झुगियां बगैर बना ली हैं, वह उन कुछ जगहों में हैं, जिन को कार्पोरेशन की तरफ से ग्रन-एप्रूव्ड कालोनी घोषित किया हुआ है । वहां जितना बिलकुल ही जरूरी सुविधायें हैं, उतनी ही वे देते हैं, लेकिन ज्यादा नहीं देते हैं । यह ठीक भी है, क्योंकि फिर वे लोग वहां से नहीं हटेंगे । जहां बिल्डिंग बनाना नहीं है, वहां पानी, रौशनी और सबक बगैरह का इन्तजाम कार्पोरेशन करे, यह कहाँ तक मुनासिब बात होगी ? इसलिये, जैसा कि मैं ने कहा है, वहां पर एक वाटर-टैप या । एक नाले को काट कर लोगों ने वहां आग बुझाने का इन्तजाम किया । जहां तक सारी झुगियों की बात है, वह प्रश्न विचारणीय है और कार्पोरेशन और दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन के द्वारा उस पर विचार हो रहा है ।

श्री स० मो० बनर्जी : मेरे सवाल को माननीय मंत्री जी नहीं समझ सके हैं । मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या दूसरी बस्तियों के बारे में विचार तभी किया जायगा, जब वहां आग लग जाये ।

Mr. Speaker: An extensive statement has been made.

12:19 hrs.

STATEMENT BY PRIME MINISTER

SITUATION IN CUBA

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): Sir, the House is no doubt not only greatly interested but anxious about the developments in Cuba. I really cannot throw very much light so far as facts are concerned. We have no special source of knowledge. We get, of course, some pieces of information but mostly we ourselves have to rely on what is appearing in the newspapers. One of the difficulties about the accounts appearing in the newspapers is to sort out what is likely to be correct and what is likely to be incorrect. Because, there are a number of radio stations about—not here I mean—in that area, some public, some known and some unknown, some secret, which give out news constantly “this has happened”. And that news is not particularly reliable.

Anyhow, for some time past, some weeks past, long before this particular development in Cuba, there were reports in the American press about the likelihood of some such thing happening, about people being trained, and the possibility of some kind of an invasion of Cuba. Now, there are, I believe, a very large number of Cubans, Cuban exiles and other Cubans, living in the United States. I should imagine there are about a hundred thousand Cubans living in the Caribbean area outside Cuba. I do not know what their sympathies are. Many of them may be pro-the present Government, pro-Castro as it is called; many of them may be against, some undoubtedly are against.

There is one fact. Preparations have been made for weeks and months past for some activity of this kind, that is from the mainland. The mainland may be the United States territory or some other territory on the mainland. And it is rather difficult to conceive that all this could take place without the acquiescence